Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC) e-ISSN: 2582-2004
Volume 02, Issue 01

DOI: 10.46523/jarssc.02.01.07 Open Access

उपन्यास और समकालीनता

अमित कुमार
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय
गोरखपुर

समकालीन साहित्य में समकालीनता की अवधारणा बहुत नवीन नहीं है। जब कभी समानान्तर युग के परिप्रेक्ष्य में लिखे गये कार्य का नामकरण हुआ तो उसे समाकालीन साहित्य के अन्तर्गत ही रखा गया जिसमें समकालीन उपन्यास को भी साहित्य अन्य विधाओं में सम्मिलित कर लिया गया। क्योंकि कोई भी साहित्य लिखा तो वर्तमान में जाता है किन्तु उस पर लेखक के भूत और भविष्य दोनों का प्रभाव पड़ता है। जिसमें लेखक का तत्कालिक अनुभव उसे लिखने के लिए उत्प्रेरित तो करता है किन्तु संस्कारवान और संभाव्य बनाने की ताकत अतीत और भविष्य से प्राप्त होती है।

साहित्य मनीषियों ने उपन्यास पर बहुत गम्भीरता से विचार किया है और उसे औद्योगिक समाज की लोकप्रिय विधा के रूप में आदर दिया है। कुछ साहित्य मनीषियों ने उपन्यास विधा को कथात्मक गद्य भी कहा है। रैल्फ फाक्स की मान्यता है कि–''उपन्यास केवल मात्र कथात्मक गद्य नहीं है वह मानव के जीवन का गद्य है–ऐसी पहली कला जो सम्पूर्ण मानव को लेकर उसे अभिव्यक्त करने की चेष्टा करती है।[१]''स्पष्टतः कहा जाए तो उपन्यास मानव को समग्र रूप में प्रस्तुत करने वाली लोककला है।

उपन्यास विधा साहित्य की वह विधा है जिसमें गुप्त जीवन को भी प्रत्यक्ष करने की क्षमता विद्यमान रहती है इसी कारण से साहित्य समीक्षकों ने उपन्यास को 'जीवन का गद्य' कहकर परिभाषित किया है। उपन्यास को एक समाजशास्त्री दृष्टि से जीवन का गद्य ही नही उसे 'समाज का गद्य' भी कहा जा सकता है। इस सम्बन्ध में एस०आर० गुप्ता कहते है कि–

''उपन्यासकार समाज का चिन्तक मार्गदर्शक समीक्षक व विश्लेषक है। वह अपनी अनुभूति के आधार पर समाज और उसकी संरचना को निर्मित करने में विविध इकाइयों उनकी भूमिका एवं प्रकार्यों, परिवर्तन एवं पुनर्गठन विचलनों आदि का चित्रण उपन्यास में करता है।''[२]

Received: 03.05.2019 Accepted: 25.05.2019 Published: 28.05.2019

समाज में स्थापित समाज की आर्थिक सामाजिक, राजनीतिक संरचनाएं भी उपन्यास लेखन को प्रभावित करने के साथ-२ लेखक को भी प्रभावित करती हैं जिनका प्रतिबिम्बन वह अपने उपन्यास में करता है। उपन्यास समाज लिखित गद्य होता है, इसलिए उसका आधार समाज होता है जो अपने वर्णन में समाज को समग्र रूप में समाहित करने का प्रयास करता है।

उपन्यास साहित्य का नव्यतम और सशक्त साहित्यिक रूप है। नव्यतम इस अर्थ में कि साहित्य में उपन्यासों के प्रचलन के पश्चात् अभी तक कोई दूसरा साहित्यिक रूप इतनी मान्यता और लोकप्रियता को प्राप्त नहीं कर सका है। और सशक्त इसलिए कि सीमाहीन क्षेत्रों की सफल अन्वेषणा और निर्बाध संचरण में कहीं भी वह भटका या असफल नहीं हुआ है। उपन्यास का विषय सीमाहीन विशाल क्षेत्र रहा है जिसके विषय के क्षेत्र को सीमा की रेखाओं में बाँधा नहीं जा सकता। नरेन्द्र कोहली के शब्दों में- ''उपन्यास की परिधि की कोई सीमा नहीं है।''[३]

उपन्यास जीवन के विशाल और बहुआयामी फलकों का संस्पर्श करता हुआ उसे समग्रता से चित्रित करता है। इसी अर्थ में उपन्यास को आधुनिक युग का महाकाव्य माना जाता है। ''मध्य युग में जो स्थान महाकाव्य का था, आधुनिक युग में वही उपन्यास का है।[४]

उपन्यास के लिए अंग्रेजी में नॉवेल शब्द का प्रयोग किया जाता है जिसका अर्थ होता है नवीन। इसकी के पर्याय के रूप में हिन्दी में उपन्यास शब्द प्रचलित हुआ है। उपन्यास शब्द का प्रयोग भारतीय साहित्य में प्राचीन काल से होता चला आ रहा है किन्तु साहित्य कि जिस विशिष्ट विधा के लिए उसका प्रयोग आज हो रहा है वैसा प्रयोग पहले नहीं हुआ था। उपन्यास शब्द आज के अर्थबोध में नवीन है। संस्कृत साहित्य में भरतमुनि के नाट्यशास्त्र- ''उपन्यास सूर्यक्तश्च तष्चतुर्थ मुदाहतम''[५] से लेकर विश्वनाथ प्रणीत साहित्य दर्पण ''उपन्यासः: प्रसंगेन भवेत्कायस्य कीर्तनम्''।[६] तक में उपन्यास शब्द का प्रयोग मिलता है किन्तु ये सभी प्रयोग उपन्यास के वर्तमान अर्थ से बहुत दूर हैं।

हिन्दी साहित्य में उपन्यास शब्द एक विशिष्ट साहित्यिक रूप की ओर इंगित करना है जिसकी मात्रा लगभग १३० वर्षों की है। उपन्यास शब्द का वर्तमान अर्थों में प्रयोग सर्वप्रथम बांग्ला भाषा में हुआ। हिन्दी में उपन्यास शब्द का आधुनिक अर्थ में सर्वप्रथम प्रयोग १८७१ मे एक कथा पुस्तक के शीर्षक रूप में (मनोहर उपन्यास) हुआ। जो अब विभिन्न भाषाओं में एक विशिष्ट कथा रूप के लिए प्रयोग होने लगा है।

Received: 03.05.2019 Accepted: 25.05.2019 Published: 28.05.2019

उपन्यास 'उप' और 'न्यास' दो शब्दों के संयोग से बना है जिसमें 'उप' का अर्थ 'समीप' तथा 'न्यास' का अर्थ 'रखना' होता है। इस प्रकार शाब्दिक अर्थ में उपन्यास समीपस्थता का अर्थ प्रकट करता है। अर्थात वह साहित्यिक कृति जो हमारे जीवन के समीप है वह उपन्यास है। उपन्यास मानव जीवन से सम्पृक्त होता है। जिसके कारण जीवन का प्रत्येक पक्ष उसमें समाहित रहता है। समग्र जीवन को उद्‌घाटित करने के कारण ही उपन्यास की परिधि को सीमाहीन माना जाता है। उपेन्द्रनाथ अश्क के अनुसार-''उपन्यास जीवन की पूरी गहमा गहमी को अपने अंक में संजोये ठाठे मारता हुआ महानद है।''[७] उपन्यास सम्राट मुन्शी प्रेमचन्द्र ने उपन्यास को ''मानव चरित्र का चित्र मात्र''[८] माना है। हिन्दी साहित्य कोश के अनुसार ''उपन्यास आधुनिक युग की उपज है-उस युग की जिसका दृष्टिकोण सर्वथा व्यक्तिवादी हो गया है, अराजकता का बोलबाला है, बाहरी दुनिया में तो कम हमारे आन्तरिक जगत में अधिक/समष्टि को दबाकर व्यक्ति ऊपर उठ आया है। इन्ही परिस्थितियों का प्रतिफलन हमारा उपन्यास साहित्य है''।[९]

समग्रतः यह कहा जा सकता है कि उपन्यास समाज और जीवन के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक स्तर को अथवा कथ्य बनाता है जिसमें जीवन के समस्त विचार एवं दृष्टिकोण बिना किसी प्राथमिकता के समाहित होते हैं। वर्तमान सन्दर्भों में उपन्यास जिस अर्थ को प्रकट करता है उसका प्राचीन शब्द से कोई सम्बन्ध नहीं है। उपन्यास का सीधा सम्बन्ध जीवन से होता है भले ही वह उसकी प्रस्तुति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से करे। उपन्यास में युग और समाज का साहित्यिक रूप में आकलन होता है। युगीन धार्मिक, राजनैतिक आर्थिक, सामाजिक तथा दार्शनिक चेतना से उद्‌भूत होकर भी उपन्यास इनके अधिक प्रभावशक्ति रखता है क्योंकि उपन्यास इन सबके मूल तत्वों वैचारिकता, यथार्थता, भविष्य दर्शिता और नैतिकता को एक साथ अपने अन्दर समाहित रखता है। इसी कारण उपन्यास साहित्य की एक विधा मात्र न होकर समग्र और सम्पूर्ण कला रूप हो जाता है। उपन्यास अपने युग के सम्पूर्ण मनोभावों तथा संघर्षों को अपने अन्दर समाहित किये रहता है क्योंकि उसका जीवन से गहरा सम्बन्ध होताहै। मानव जीवन से प्राप्त अनुभूतियाँ ही उपन्यास का विषय बनती है। उपन्यास समकालीन जीवन के यथार्थ के साथ-२ युग की घटनाओं और स्थितियों को प्रकट करता है क्योंकि उसका उद्‌देश्य जीवन के विविध आयामों को उद्‌घाटित करना होता है। उपन्यास सामाजिक परिवर्तनों के साथ बदले हुए मानव जीवन के समानान्तर चलता है और जीवन में आने वाले बदलावों को मुखर वाणी देता है। समकालीनता के इस सन्दर्भ में यह कहा जा सकता है कि-''उपन्यास अपपने समय का सच्चा इतिहास होता है।''[१०] उपन्यास जीवन के प्रत्येक

Received: 03.05.2019 Accepted: 25.05.2019 Published: 28.05.2019

क्षण का उद्घाटन युग के परिवेश के साथ जुड़कर करता है जिसमें उस युग की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थितियाँ युग की चेतना और मानसिकता का निर्माण करती है। उपन्यास की समकालीन यथार्थपूर्ण प्रस्तुति में उपन्यासकार की सृजन क्षमता तथा कल्पना का भी योग रहता है जिससे वह जीवन को कल्पना के रूप सौन्दर्य प्रदान करता है।

अपने युग से जुड़ा होने के कारण उपन्यासकार युग की विवेचना अपने उपन्यास में करता है। इस सम्बन्ध में सूक्ष्म अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि युगीन परिवेश को अपने अन्दर गहराई से आत्मसात करने के कारण उपन्यासकार अपने युग का प्रतिनिधि बन जाता है। इस सम्बन्ध में राजेन्द्र यादव लिखते हैं कि ''किसी भी युग के आधुनिक कथाकार को ले लीजिए उसने अपने सम और परिवेश को सम्पूर्णता में इस हद तक आत्मसात कर लिया है कि उसके रचनात्मक व्यक्तित्व के माध्यम से ही हम युग की नब्ज पकड़ लेते हैं। समय की आत्मा उसके लेखन में बोलती है।''[११]

उपन्यासकार समाज का सबसे संवेदनशील व्यक्ति होता है इसी कारण वह समकालीन सत्य से परिचित होकर संभावित भविष्य की परिकल्पना करता है। जीवन की औपन्यासिक परिकल्पना की आधार भूमि लेखक के युग की वे समस्याएँ होती हैं जिससे वह प्रभावित होता है इसी कारण से समकालीनता उपन्यास का महत्वपूर्ण अंग बन जाती है।

समकालीन उपन्यास का आवश्यक तत्व होती है जो उपन्यास के कथ्य और शिल्प दोनों का निर्धारण करती है। समकालीन स्थितियाँ उपन्यासकार को कथ्य प्रदान करती हैं तथा उसको प्रभावित एवं प्रेरित करती है जिसके अनुरूप उपन्यासकार उपन्यास के शिल्प का निर्धारण करता है। इसी कारण उपन्यास साहित्य का अध्ययन प्रारम्भ करते ही दृष्टि समकालीन परिवेश पर स्वतः ही केन्द्रित हो जाती है। नरेन्द्र कोहली के शब्दों में ''आधुनिक बोध के लिए भी साहित्य का समय के साथ-साथ चलना, समकालीन रहना आवश्यक है।''[१२] इसी आधुनिक बोध और युगीन परिवेश के कारण उपन्यास जीवन के साथ युगीन संस्कृति के स्वरूप का सूचक होता है। उपन्यासों में युगीन परिवेश समाहित होता है जिसमें समकालीन महत्वपूर्ण तत्व के रूप में होती है। अतः यह कहा जा सकता है कि समकालीन होना उपन्यास की नियति है।

Received: 03.05.2019 Accepted: 25.05.2019 Published: 28.05.2019

संदर्भ ग्रंथ-सूची

- रैल्फ फाक्स - उपन्यास और लोक जीवन, पृष्ठ-१४१
- एस०आर०गुप्ता - उपन्यास का समाजशास्त्र, सीता प्रकाशन हाथरस पृष्ठ- १७
- नरेन्द्र कोहली - हिन्दी उपन्यास सृजन और सिद्धान्त, पृष्ठ-९६
- डॉ० धीरेन्द्र वर्मा (सं०)- हिन्दी साहित्य (तृतीय खण्ड), पृष्ठ-५४
- भरत मुनि- नाट्यशास्त्र, १९/३४
- विश्वनाथ- साहित्य दर्पण, ६/३१०
- उपेन्द्रनाथ अश्क- ज्यादा अपनीः कम पराई, पृष्ट-१५५
- प्रेमचंद-साहित्य का उ्देश्य, पृष्ठ-६०
- धीरेन्द्र वर्मा (सं०)- हिन्दी साहित्य कोश भाग-१, पृष्ठ-१३४
- गोपालराम गहमरी-गेरूआ बाबा, वक्तव्य से।
- राजेनद्र यादव-कहानीः स्वरूप और संवेदना, पृष्ठ-७०
- नरेन्द्र कोहली-हिन्दी उपनयास सृजन और सिद्धांत

Received: 03.05.2019 Accepted: 25.05.2019 Published: 28.05.2019